Rural Industries Planning Committee

1678. SHRI N. R. LASKAR:
SHRI B. N. SHASTRI:
SHRI CHENGALRAYA NAIDU:
SHRI R. R. SINGH DEO:

Will the Minister of INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Government has reconstituted the high powered Rural Industries Planning Committee;

(b) if so, the main reasons for its reconstitution; and

(c) how far the transfer of administrative responsibility to the Rural Industries from the Plannng Commission and the reconstitution of the Committee will help to promote the rural industries?

THE MINISTER OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS (SHRI F. A. AHMED): (a) Yes.

(b) The main reason for reconstitution of the Committee was to make it more broad-based by ncluding in it the Central Ministers concerned with supporting programmes essential for rural industrialisation and the Industries Ministers of the States concerned with the rural industries projects programme.

(c) Both the transfer of the administrative responsibility relating to Rural Industries Projects programme from the Planning Commission to the Ministry of Industrial Development and Company Affairs and the reconstitution of the Rural Industries Planning Committee are expected to Letter promote the development of industries in rural areas.

उत्तर प्रदेश में उद्योग

1679. **श्री जगदेवर यादव :** क्या औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि मध्य रेलवे की बम्बई-हावड़ा लाइन उत्तर प्रदेश में बांदा जिले की दक्षिण सीमा के साथ-साथ मानिकपुर, अकुंन्डी, तिकरिया के पहाड़ी प्रदेश से गुजरती है जहां अब तक कोई उद्योग स्थापित नहीं किया गया ;

(ख) क्या यह भी सच है कि इस प्रदेश में कोई उद्योग नहीं है जिसमें लोगों को रोजगार मिल सके ;

(ग) क्या सरकार का विचार इस क्षेत्र में सीमेंट, कागज अथवा पत्थर कूटना उद्योग स्थापित करने का है ; और

(घ) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्री (श्री फखरुद्दीन अली अहमद): (क) से (घ). जानकारी इकट्ठी की जा रही है और वह सभा-पटल पर रख दी जायेगी ।

राज्य व्यापार निगम

1680. **श्री मृत्युंजय प्रसाद :** क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) राज्य व्यापार निगम के वर्ष 1966–67 के वार्षिक प्रतिवेदन के पृष्ठ 62 पर 'लाभ और हानि लेखा' के शीर्षक के अन्तर्गत 'व्यापार व्यय' का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या यह सच है कि वर्ष 1966–67 में देयताओं में प्रतिभूत तथा अप्रतिभूत ऋणों की राशि 977 लाख रुपये थी जब कि पिछले वर्ष यह राशि 584 लाख रुपये थी और लाभ तथा हानि खाते में व्यय की मद के अन्तर्गत ब्याज के रूप में देय राशि 93 लाख रुपये दिखाई गई थी जब कि गत वर्ष यह राशि केवल 16 लाख रुपये थी ; और